ग्रन्थ

महामहोपाध्याय गणपतिशास्त्री जी ने भास के जिन तेरह रूपकों की खोज की है, वे निम्नलिखित हैं :—

१ प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, २ स्वप्नवासवदत्तम्, ३ प्रतिमानाटकम्, ४ पञ्चरात्रम्, ५ अभिषेकनाटकम्, ६ मध्यमव्यायोगः, ७ अविमारकम्, ८ चारुदत्तम्, ९ कर्णभारम्, १० दूतवाक्यम्, ११ दूतघटोत्कचम्, १२ ऊरुभङ्गम् तथा १३ बालचरितम्।

प्रतिज्ञायौगन्धरायण—भास के इस नाटक में कौशाम्बी के राजा वत्सराज उदयन द्वारा उज्जयिनी के राजा प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता के हरण की कथा है। आखेट के प्रेमी राजा उदयन के कृत्रिम हाथी के छल से महासेन द्वारा पकड़े जाने पर उदयन का मन्त्री यौगन्धरायण राजा को बन्धन से मुक्ति दिलाने और कुमारी वासवदत्ता के साथ उनका पाणिग्रहण कराने की प्रतिज्ञा करता है। मन्त्री की दृढ़ प्रतिज्ञा तथा कुटिल नीति का यह सर्वोत्कृष्ट निदर्शन है। इसी के आधार पर इस रूपक का नाम 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' पड़ा है।

स्वप्नवासवदत्त—भास की सभी कृतियों में यह सर्वोत्तम रचना है। इसे 'प्रतिज्ञानाटिका' का उत्तरार्ध ही समझना संगत एवं उचित होगा। इस रूपक

में राजा उदयन का वासवदत्ता के साथ स्वप्नावस्था में योग होता है। इसी आधार पर इस रूपक का नाम 'स्वप्नवासवदत्तम्' रखा गया है। प्रद्योत के राजमहल से वासवदत्ता का हरण कर लाने के बाद राजा उदयन विषयवासना में लिप्त हो जाता है और राजकीय कर्तव्यों में किसी प्रकार की रुचि नहीं लेता। ऐसी दशा में विरोधियों का होना स्वाभाविक ही है। राजा अरुणि को आक्रमण करने का सुअवसर मिल जाता है। उदयन को अपने शत्रुओं को परास्त करने के लिये मगधनरेश दर्शक की सहायता लेना अत्यावश्यक होता है। यौगन्धरायण वासवदत्ता के अग्नि में जल मरने का मिथ्या समाचार फैलाता है, परन्तु वास्तव में उसे ले जाकर मगध के राजा दर्शक की भगिनी पद्मावती के संरक्षण में रख आता है। कालान्तर में वत्सराज का पद्मावती के साथ विवाह हो जाता है। एक दिन राजा वासवदत्ता को स्वप्नावस्था में देखता है और उससे मिलने के लिये अत्यन्त उत्सुक हो जाता है। उसके जीवित होने में किञ्चित् विश्वास होने लगता है। बाद में वासवदत्ता राजा के समक्ष लाई जाती है और दोनों का आनन्द मिलन होता है। इस विधि से इस रूपक का सुखमय पर्यवसान होता है।

प्रतिमानाटक—इस रूपक का आधार रामायण की कथा है। इसमें रामवन-गमन, सीताहरण आदि अयोध्याकाण्ड से आरम्भ होकर रावणवध पर्यन्त की घटनाओं का वर्णन किया गया है। इस नाटक के आधार पर अतीत भारत में ललितकलासम्बन्धी नूतन वृत्त का मूल्याङ्कन किया जा सकता है। अतीत काल में भारतीय नरेशों के देवकुल होते थे, जिनमें मानवशरीर बदलने के बाद राजाओं की प्रस्तर की बड़ी मूर्तियाँ रखी जाती थीं। इक्ष्वाकुवंश के नरेशों का भी देव-कुल था, जिसमें दिवंगत राजाओं की प्रतिमाएँ रखी जाती थीं। राजा दशरथ की भी मूर्ति देवकुल में रखी गई थी। भरत अपने मामा के घर से लौटते समय नगर से बाहर देवकुल में रखी हुई अपने पिता दशरथ की प्रतिमा को देखकर उनकी मृत्यु का अनुमान स्वयं ही कर लेता है। इसी प्रतिमा के आधार पर इस रूपक का नाम 'प्रतिमानाटक' है।

पञ्चरात्र—महाभारत की कथा की एक घटना को लेकर इस नाटक की रचना हुई है। दुर्योधन यज्ञ में गुरु द्रोणाचार्य को मनोवांछित दक्षिणा देने के लिये उद्यत होता है। द्रोणाचार्य पाण्डवों को आधा राज्य देने के लिए कहते है। इस शर्त पर कि पांच रात्रियों के भीतर यदि पांडव मिल जायेंगे तो वह उन्हें राज्य दे देगा, द्रोणाचार्य उसकी इस प्रतिज्ञा को स्वीकार करते हैं। बाद में गोहरण के

उपलक्ष्य में कौरव राजा विराट की राजधानी पर आक्रमण करते हैं। राजकुम
उत्तर कौरवों से युद्ध करने के लिए चल देता है। ऐसी स्थिति में अज्ञातावस्
में स्थित अर्जुन की सहायता पाकर उत्तर की विजय होती है। पाण्डव समय
साथ प्रकाश में आते हैं। द्रोणाचार्य दुर्योधन को पूर्वकृत प्रतिज्ञा का स्मरण दिला
हैं। दुर्योधन उन्हें आधा राज्य दे देता है। महाभारत की कथा से कोई संगति
मिलने से यह घटना अंशतः कविप्रतिभा की उपज प्रतीत होती है।

अभिषेक—इस नाटक में किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड तथा रा
के राज्याभिषेक पर्यन्त की कथा वर्णित है। इसी राज्याभिषेक के कारण उ
नाटक का नाम 'अभिषेक' पड़ा है।

मध्यमव्यायोग—इस नाटक में पाण्डुपुत्रों के वनवास के समय घटोत्कच के
हाथों से भीम द्वारा एक ब्राह्मणबालक की सुरक्षा की कथा वर्णित है। व्यायोग
शब्द नाटकों का एक भेद है। मध्यम शब्द भीम और उस ब्राह्मण बालक के
लिये प्रयुक्त हुआ है, जिसे भीम ने घटोत्कच के क्रूर हाथों से बचाया था। अत-
एव इसका नाम 'मध्यमव्यायोग' रखा गया है।

अविमारक—इस रूपक में सौवीर राजा के पुत्र विष्णुसेन, जो अविमारक के
नाम से प्रख्यात हैं तथा राजा कुन्तिभोज की लड़की कुरङ्गी के विवाह और
प्रणय की घटना का उल्लेख किया गया है। सम्भव है किसी अतीत परम्परागत
आख्यायिका को प्रकृत नाटक का रूप दिया गया है, जिसका निर्देश कामसूत्र में
पाया जाता है। विष्णुसेन ने भेड़रूपधारी 'अवि' नामक दैत्य को मारा था।
इसलिये इस नाटक का नाम 'अविमारक' रखा गया है।

दरिद्रचारुदत्त—इस रूपक में ऐश्वर्यहीन पर चरित्रवान् विप्र चारुदत्त और
गुणग्राहिणी वाराङ्गना वसन्तसेना की प्रेमलीला वर्णित है।

कर्णभार, दूतवाक्य, दूतघटोत्कच तथा ऊरुभङ्ग—महाभारत के महत्वपूर्ण
तत्तत् घटनाचक्रों से उक्त नाटक सम्बन्ध रखते हैं।

भास की कृतियों को विषयानुसार पाँच भागों में बाँटा जा सकता है—
रामायण पर आधारित नाटक, महाभारत पर आधारित नाटक, भागवतकथा-
श्रित रूपक, लोक-प्रचलित कथा पर आश्रित नाटक और उदयन की कथा से
सम्बन्धित नाटक।